

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळे.

—: हस्त लिखित संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक

५

१८५(१८५)

ग्रंथ नाम

सु

गान्यं.

विषय

मराठी काव्य.



Joint Project of Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

॥ श्री गणेशाय नमः श्री मानेंडाय नमः सीतासे
 ॥ वश्लोक बंद ॥ दु ही ता जाणो नी या मान सी
 ॥ उपवर ॥ तेरा वी दे ही जे न के मा डी ले से
 ॥ वर ॥ अणा अता सम गे दे सी चे नृ पवर ॥ १ ॥
 ॥ जो नी या वार्ती क पाट वी ले वर ॥ १ ॥ हे रें को नी
 ॥ भु पा क पृथ्वी पती ने ॥ १ ॥ स सु र्य चे द्वा दी
 ॥ स ते प्र ती प न ले ॥ १ ॥ चो प वी शा क म
 ॥ नी व च क ले ॥ १ ॥ ग क ली ला क त्पा
 ॥ ती न हा ले ॥ १ ॥ ते ॥ बो ला वी ले स र्व र
 ॥ श्री श्वरा ॥ प त्री ले ॥ १ ॥ वी द्या मी त्र मु नी व
 ॥ रा ॥ श्री राम मृ ण की अ हो ये न सो से व रा ॥
 ॥ स्वा मी चे कु पे जे टी हो ती ले थो र थो रा ॥ १ ॥ स
 ॥ व रा म सु मी त्र नी घा ले दी ज व र ॥ वा ज नी
 ॥ शं ख से री अ णी ते की तु तार ॥ स ह र जे न
 ॥ क रा ज ये वो नी सा मो र ॥ पु जा अं र सी ता

॥ वीलो कीरा जकु मर ॥ ४ ॥ लं का नाथ तो व
 ॥ ला सहर सैव रा सी ॥ वा स्ये दण कारे ना द
 ॥ उ मट अ का सी ॥ स व सै न्य ते मा ह धोर धं र
 ॥ रा क्ष सी ॥ रा जे दे खो नी ते का हा त टा की मी
 ॥ शा सी ॥ ७ ॥ स म स्त रा ज म नी क लो नी या वी
 ॥ चार ॥ हे तो ध नु शा दी स ते मा ह भं य कर ॥
 ॥ अ ता तु मी उ ने ची ॥ पो न चै सार ॥ लं का
 ॥ प ती तो ये श क ॥ का र ॥ ९ ॥ ते का द श
 ॥ न ने हा स्य करो ॥ १० ॥ मा ह हर न नो
 ॥ का य पा त ला स ॥ म्हु ने के ऊ पे न का
 ॥ मो डी न का बी ॥ र्थ व ण हा तु शा दी
 ॥ से म ज मा न सी ॥ ११ ॥ रा ज्जा म्हु ने ब का डे ची
 ॥ कु टा चे क वा सी ॥ हा त व मो डी ल की जी ब क
 ॥ ध नु शा सी ॥ उ ग ची प ण हा म्या करा वा कै सी
 ॥ या सी ॥ म ग मा सी ते का रा मी रा हे ली अ सो
 ॥ सी ॥ १४ ॥ क्रो धे द श व गै त्र म्हु ने पुं क ऊ पे न का
 ॥ ही प ही ली च वी धी न ने मी ली अ से का ॥ अ

॥ तारा उपमी क की ले उ तं म लो की का ॥ मो न
 ॥ चे सी ता ती हो म उप ला गी अ पी का ॥ ९ ॥ शु
 ॥ मे उ का मा डी तु उप को ण दी से वी र ॥ हे म
 ॥ ज ला गी शो धो नी या सा गे स ह र ॥ नृ प ती
 ॥ ची तु अ स्ता न ध री ते पा म र ॥ म उ प उ डे
 ॥ सा सी चा प न उ च ले ख र ॥ १० ॥ दे वा दी का
 ॥ सी भ य मा से उ ॥ ११ ॥ म उ प सी को
 ॥ ण उ भा गी ॥ १२ ॥ ध र के तो वी र
 ॥ ची पं चा ग धे ॥ १३ ॥ न य ग ह ते की
 ॥ म्पा स्ता पे नी य ॥ १४ ॥ मा श्वा धा
 ॥ के सु र्य उ भा गी ॥ १५ ॥ या क र ॥ सह श्र ने
 ॥ रा क री गुं फो नी या ते हा र ॥ दे ती स को टी
 ॥ दे व हे बं डी नी र तं र ॥ का मा का मी पा हु
 ॥ नी दे ते से ये क श र ॥ १६ ॥ या नृ पा ची र
 ॥ य पा व पा का य का र ण ॥ मी च या चा पा
 ॥ अं गी न न ला गी ता क्षी ण ॥ कै ला स हा ल

॥ कीले म्यासा मर्थे करो न ॥ नेथ धनुश बा
 ॥ पडे त्रुणतु शजाणे ॥ १३ ॥ रावणे को धे अव
 ॥ लोकीले धनुशाते ॥ मालगाडी कसोनी दो
 ॥ दंडपीटी हाते ॥ चापासी संघटे चावोनी
 ॥ यावोष्ट दंत ॥ अरक्त नेत्र की रवी दी से
 ॥ हाक्रतांते ॥ १४ ॥ बहुते न ते धनुश उभा
 ॥ रोनी हाती ॥ सच ॥ चर्म तो नेचोद के
 ॥ श्रवणी ॥ तो ॥ ते ककापे राक्ष
 ॥ सपती ॥ हे दीष्ट ॥ जयभीन राज
 ॥ पंग्वी ॥ १५ ॥ सीत ॥ ण हा द शतोडावी
 ॥ चीत्र ॥ सरव्या मृगलासी ते हा की बौल सी
 ॥ पौत्र ॥ वीस हास्त यासी बाईं मेला अपवी
 ॥ त्र ॥ चाप यासी न उल्ले तो यो जावामंत्र ॥ १६ ॥
 ॥ जानकी प्रती संकट बहु न ते धवा ॥ यास
 ॥ मई मजपाव सांब सदाशीवा ॥ सागती र

॥ खीया ते न वसा सर्व देवा ॥ हे धनुशन उच
 ॥ लेणुं करी सांभवा ॥ १७ ॥ जे न क कण्यचा
 ॥ धावाहुं कोनी श्रवणी ॥ पीशाचे गणासीअ
 ॥ शापी पीना कपाणी ॥ ते कागुसरुपे धनुशा
 ॥ वरी व्योघोनी ॥ सोला मारोनी रावण पाडी
 ॥ लाववनी ॥ १८ ॥ उरावरी धनुश पडीले प्रंचे
 ॥ ॥ लजीत होउनी ॥ नितसिंदश तोडे ॥ म्ह
 ॥ गोमउपहारी ॥ गोदड ॥ दशमुखा
 ॥ तुनी वाहतीअ ॥ १९ ॥ कडाडीले ध
 ॥ नुशते अंभावरी ॥ वकीन राजने का
 ॥ मुखी घालोनी ॥ नीसा मुजात ते नाव
 ॥ रहे चाप मोट ॥ अमोद यकराचे अस्त्री होती
 ॥ लपीठ ॥ २० ॥ बहुत यत्त करोनी दशमुखें
 ॥ कर ॥ चाप अनुमात्र नहाले हृदयावर ॥ अ
 ॥ तासाग जे न काकैसा करुवी चार ॥ वीदेही
 ॥ बोलकी राम म्हणावा हे बर ॥ २१ ॥ जे न का

॥ हे कीमर्थ बोलतो सी नीष्टुर ॥ अव घडली या
 ॥ हे करुन येउतर ॥ अता तो प्राण जाउ पाहतसे
 ॥ सहर ॥ पुत्र माझे प्रतापी सुउदे तील तर ॥ २३ ॥
 ॥ ते काजेन कर राज हा श्य करी मानसी ॥ बकी
 ॥ एवीर अणाधनु काडावयासी ॥ लक्षानुल
 ॥ क्षवलेचापवोडावयासी ॥ विदुतकरीसी
 ॥ लक्ष्मी काडीलेकडे ॥ दशानन उठोनी मु
 ॥ तीका साडीकर ॥ चावरे पडे धर
 ॥ जीवर ॥ मोडी ये ॥ रफीरचे काकार ॥
 ॥ ते काशेवक उद ॥ नीकर ती स्तीर ॥ २४ ॥
 ॥ म्हणती यासी काय ॥ लावे शड पण ॥ या ग्रा
 ॥ मी कोणी पंचाक्षरी अणा पाहुन ॥ नीबें नारे कर
 ॥ जुरीटा का म्हणती वो वाकुन ॥ ते कासा वध हो
 ॥ वोनी बैसलारा वण ॥ २५ ॥ मग जेन कअशा
 ॥ करी की प्रधानासी ॥ सक कर राज अता अणा
 ॥ रंगभुमीसी ॥ अश्व पती गजे पती पाचारास

॥ कक ॥ नरपती वंगमही गते क्षती पाक ॥ २६ ॥
 ॥ रुमते लंगकरनाटकी कुंभकोन ॥ सामझा
 ॥ वडीका नडे म्हराक्षीको कण ॥ कासीकां नीव
 ॥ बातीका मल्याड देसीचे ॥ मथुरामाया श्रीरंग
 ॥ प्रभासक्षत्रीचे ॥ २७ ॥ तेका प्रधानबोलतीस
 ॥ वरसीयासी ॥ रायबोलावीलेचापउचला
 ॥ वपासी ॥ येकचेव ॥ होनीहासतीमान
 ॥ सी ॥ लटकीसी ॥ काअमासी ॥ २८ ॥
 ॥ येककृणतधनु ॥ नायलेखा ॥ पंरतु
 ॥ अमुच्या शरीराचा ॥ वा ॥ दुखणाइतअ
 ॥ म्हीअनजाइना ॥ तेराठदकाचालाग
 ॥ लाबहुतदेखा ॥ २९ ॥ चापाचनामघेताचीभ
 ॥ रेहुडहुडी ॥ साभयेअंगमोठोनीयेतघडोघडी ॥
 ॥ कडुअवशेदाचीनसेअमासीगोडी ॥ अनाची
 ॥ सीसारीमीषानखातोअवडी ॥ ३० ॥ तुमीमल्लेध
 ॥ एपुष्टीसतीबर ॥ तरीवातानजायबंदीके

॥ लशरीर ॥ उरात सदा ज्वळकी पैसवी कार ॥
 ॥ नीद्रा कैची सोप घेतो चारी प्रहर ॥ ३१ ॥ या ब
 ॥ का डेरा वणाचा अपमान जाला ॥ तेथ तो अ
 ॥ मुचा कापे जभाव धरीला ॥ दुखण येत अ
 ॥ म्हासी मग कैसी पाला ॥ सहज सैधरा जलो
 ॥ चो जपाव पाला ॥ ३२ ॥ ते कासा हो सख्या का
 ॥ ये बोलती सीत सीत सखे ॥ त सखे मार बकी
 ॥ ३३ ॥ सुर्यवो सो ॥ ३४ ॥ चेरा जे साती क
 ॥ पुन्य रासी ॥ वीर ॥ ते गौड देसी च्या रा
 ॥ जीया सी ॥ ३५ ॥ राजस गुण ते पाह
 ॥ कासी खंडीचे ॥ सात नदी ललतुर गका हा
 ॥ रमुता फकाचे ॥ पारी सचेतुर राज ते
 ॥ की मलयाड देसीचे ॥ सख्या सागती खुण प
 ॥ श्रीचीत नसे सीतचे ॥ ३६ ॥ का के साव के गौ
 ॥ वीरवणी ते का नृपवर ॥ जडीत कंकण हाती
 ॥ पद कीठ का की हीर ॥ शाला दुशाला जडी

॥ तमुद्दीकाशोभनीकर ॥ पुंसराज्येसावीतीसी
 ॥ तेचेचीतनसेस्तीर ॥ ३४ ॥ अणरवीराजसुर्व
 ॥ सोमवौसीसागतीखुणे ॥ पगड्यासाहोशोभ
 ॥ तीलालशुभपीतवर्ण ॥ टालाकीरंगाहास
 ॥ कीघोरमीशाभयेवान ॥ कर्णीमुक्तेशकाकी
 ॥ तेसीतानकरीश्रवणे ॥ ३५ ॥ अतासरव्यावी
 ॥ चोरकरती ॥ ३६ ॥ दीर्घदी
 ॥ शीशोधोनीहा ॥ अंडकी ॥ मधेभा
 ॥ गीलक्षलावीता ॥ ठकाकी ॥ तेहासी
 ॥ ताहाशायमान ॥ अकमकी ॥ ३७ ॥
 ॥ प्रधानसागतीका ॥ याचीचीचार ॥ सम
 ॥ स्तासीलागलेअसेकीसीतज्वर ॥ बहुते
 ॥ कसासीअग्रहकेलाप्रकार ॥ चापाचे
 ॥ नामचेतापडतीभुमीवर ॥ ३८ ॥ तेहाजे
 ॥ नकराजचींतातुरमानसी ॥ पणउगाची
 ॥ केलाहासावयाजेनासी ॥ याधनुशान

॥ कील डीत कैल सर्वासी ॥ नीक्षत्री पृथ्वीजा
 ॥ लीतुं सरीसे मंडसी ॥ ३९ ॥ मगरुषी मंडका
 ॥ तोनी उठीला वीर ॥ अजान बाहो ते अश्वीरी
 ॥ सें प्रभाकर ॥ सीता सरख्या कडे घा होनी हाश
 ॥ अंतर ॥ म्हणे या सम इतु पाव शी व शंकर ॥
 ॥ ४० ॥ ते का अश्वीर्य करे नीयारुषी ब्रम्ह
 ॥ णी ॥ हा तो केण म... राकार्य सीरो मणी
 ॥ अधीच नीर्बव... की ब्रम्हवाणी ॥
 ॥ कैसचा पडच... अशं कामनी ॥ ४१ ॥
 ॥ ते का वीश्यामीत्र... दुनी का गोनीया ॥
 ॥ व्यर्थ कल्प नातु... करणची वाया ॥
 ॥ तुमच्या असीर्वादे अरी हें आतीलया ॥
 ॥ अताया सी अयये ते करामुनी वर्या ॥ ४२ ॥
 ॥ रामे कौसी का सी करो नीया प्रणीपात ॥ सम
 ॥ मगरुषी सकरो नीया दंडवत ॥ कार्मुका सीन
 ॥ मोनी मृती का लावी हात ॥ श्रीराम ते का

॥ क्रोध वीलो कीले चापाते ॥ ४३ ॥ दशरथ
 ॥ सुत धनुशाला वीना पाणी ॥ ते हा चाप थर
 ॥ थर कापतसे ध्यानी ॥ कडकडवो डोनी दु
 ॥ कडे केल दोही ॥ रुषी जय जय कार कर
 ॥ की ते क्षणी ॥ ४४ ॥ राम म्हणे धनुशा सी चड
 ॥ वावे सीत ॥ तो चाप दुसरे पडीले पृथ्वीवर
 ॥ त ॥ वीश्या मी प्रमद ॥ डांगल गेसीत ॥
 ॥ ज्ञान ते संधान ॥ एकदुहीत ॥ ४५ ॥
 ॥ कोण हे कवणा ॥ रुषी जय ॥ जेन
 ॥ कम्हणे सा मगा ॥ द्याम जय ॥ तुम्ही
 ॥ कुपोकरो नीया ॥ बोला वेस हज ॥
 ॥ ते कारुषी म्हणती देशरथ अस जे ॥
 ॥ ४६ ॥ मग हा शीयमान जेन कमान सी ॥
 ॥ ते को मृग लोचनेना माकडाली रामा सी ॥
 ॥ राधा पश्य करीता जाला की प्रधाना

॥ सी ॥ वीलंब ना ही तो अतास हर लग्ना सी ॥
 ॥ ४७ ॥ क्रोधे रावण बोले उभारी नी हात ॥ सम
 ॥ स्तरा जी या सी सागतो ये क मात ॥ सी ता
 ॥ मी ने ही न तरी च मा शा पुर शार्थ ॥ द श मौ
 ॥ ली म्लान मुख नी घेतलं क पथे ॥ ४८ ॥ जे
 ॥ न कराय म्हणे अता ब हु वर सी ॥ अधी मु
 ॥ क पाठ वा वै जणे ॥ रा सी ॥ अश्व कुं
 ॥ र सी बी का सा ॥ सी ॥ मं त्री सी धं
 ॥ जाला नी घे स ॥ सी ॥ ४९ ॥ अ यो
 ॥ ध्या न गर ते का ॥ दी वी सी ॥ कुं कु म
 ॥ यु क्त प त्री का ॥ ज य सी ॥ स वर नी
 ॥ घा वे की वी दे ह न रा सी ॥ रा ये वी शा सी
 ॥ के ली पा ठ वी ले अ म्हा सी ॥ ५० ॥ इं क डे जे
 ॥ न क रा ज कर वी अ रा स ॥ व र उ भा री ले मं
 ॥ उ पं सु र्य प्र का श ॥ ख णे ख णी शो भ ती मु का फ
 ॥ का चे घो श ॥ र त दी प क ला वी ले प र म उ ल्हा स ॥

॥ ११ ॥ नगर श्रीगारीले ते कीबहुनापरी ॥ चौ
 ॥ कामाजी कोर ज्याची चेपकनाभारी ॥ केश
 ॥ रकसुरीचे सडे दीले चौफेरी ॥ सुंगधं परीम
 ॥ कतो कीमंडपदारी ॥ १२ ॥ दशरथे सजेक
 ॥ रोनीयादकभार ॥ भरतशत्रुघ्नसीधं जा
 ॥ ले सत्वर ॥ सीवकी जीवात्मा स्त्रीया शोभनी
 ॥ चामर ॥ वाइयेव नापरीची ते सुखे
 ॥ १३ ॥ चघरडे पामांगशुद्धी ॥ अ
 ॥ श्वस्वारपापदका तदादी ॥ सनयाना
 ॥ दनसमायपुर्णद हारले वीदेहनग
 ॥ रानीकटी ॥ १४ ॥ तेकासुचेना ज्वालीजेनेकरा
 ॥ जाप्रती ॥ सककसमोदायेसीते प्रधानमंत्री ॥
 ॥ ध्वजापताकापुढे साकीफडकारती ॥ सीमंत
 ॥ पुजेनाची घेतली ते अयेती ॥ १५ ॥ दशरथसु
 ॥ चेनाकरीते कारुषीसी ॥ कौसीकअलासवरा

॥ मल्लसुमणासी ॥ भेरी करणे तु तार वाज्यनीवी
 ॥ शोषी ॥ राजान मस्कारी ते कारुषीचेरणासी ॥
 ॥ २६ ॥ कौशल्या अश्चर्य करीतसें कीमनाते ॥
 ॥ कार्मुक कैसभंगीले सकुमार हाते ॥ वयधा
 ॥ कुटेनी बलोन करीतरीत ॥ दीष्ट होइ लया
 ॥ बाक कासी अवचीत ॥ २७ ॥ मग सककड
 ॥ बीकरोनी याची नगरासी म्हणती
 ॥ हेनी घेकु मरणीवाह करावा
 ॥ तीसवर ॥ राजा हेतवो त्या माह
 ॥ सुंदर ॥ २८ ॥ जे रादयासी बोलावी
 ॥ लेकीवर ॥ जीवगक ज्यची लग्न होय तो
 ॥ प्रकार ॥ रुषी म्हणती की हे चीता सी अले
 ॥ खर ॥ जेन का प्रतीने सागाउतं महेवर ॥ २९ ॥
 ॥ भरणी बोले ते का जेन करा जीयासी ॥ रु
 ॥ बीमने जाले कण्या दया व्यासु र्यवौसी ॥
 ॥ राजा म्हणे की हे मज मा नले मान सी ॥

॥ सत्वर नी घाव ता सी में त पुजे ना सी ॥ ६० ॥ वस्त्र
 ॥ अरणे अकं कार सुवर्ण पात्री ॥ माहवी सं न ते
 ॥ पुराणी कश डशा स्त्री ॥ भट भाट ब्राह्मण वैश सु
 ॥ द्वादी श्वत्री ॥ सत्वर अले द शर था चे भेटी प्रती ॥
 ॥ ६१ ॥ जे न करा ज भे टे सक क मंड की सी ॥ वस्त्र
 ॥ षण प्रथ क अर्ध ज्ञा मा ता सी ॥ सम स्ता गौर
 ॥ बो नी अणी ले ज्ञा ॥ वा ये वा ज नी जै सा
 ॥ मे घ ग डे अव भट भ्रूण ती की क
 ॥ रा वे मंग क स्था ॥ ड पा मा जी ते दे व क
 ॥ वी धा न ॥ व व घा रा सी शरी दाले पन ॥
 ॥ सत्वर जाले ते हा प्र न सं त र्प ण ॥ ६२ ॥ घटी
 ॥ का घालो नी बै स ले सु शे ब्रा ह्म ण ॥ रुर व व त
 ॥ न्या वे ते वर मा ते कार णे ॥ जे न क आ र्था पदा
 ॥ र्थ चे वो नी सं पु र्ण ॥ ते का वर मा या करा ती
 ॥ स्व स्त भो जे न ॥ ६३ ॥ तो इ क डे भ ट बो ल ती
 ॥ की सा व धा न ॥ वर सत्वरि अणा अधी च व

॥ घेजण ॥ वास्ये वाज्य ता पृथ्वी होय हा शीय मा
 ॥ न ॥ माझे कंण्यस जोडा मी काळा तो सगुण ॥
 ॥ ६५ ॥ वास्या चा घोश होतसे तो प्रबळ ॥ वर नी
 ॥ घाले सुर्य प्रभे होनी षगळे ॥ नृसांग नागा
 ॥ ती नाचती साकी सुताळ ॥ भाट गर्जे नाकर
 ॥ ती ते व्हा ब्रीदा वळ ॥ ६६ ॥ सतर वर खले ते
 ॥ की मंड पदासी ॥ त ॥ ताका पालछे चे
 ॥ शोभे वरी सा ॥ स पंचारी का
 ॥ सीरी ॥ मंगळ व ॥ ती ते कोना ना प
 ॥ री ॥ ६७ ॥ मंग प्रव ॥ लातो की मंड पस्था
 ॥ नी ॥ रुषी मंड का ॥ ते कौसी क मुनी ॥
 ॥ दशरथा सवे तो वसीष्ट गुरु ज्ञानी ॥ जे न
 ॥ क गुरु अहेल्या सुत सीरो मणी ॥ कु की उ
 ॥ चार करनी उभय साक्षणी ॥ ६८ ॥ मांड व्या
 ॥ श्रुती कीर्ती मर्त शत्रु घना ते ॥ सीता उन्मीका
 ॥ श्रीरामचे दसु मी जा ते ॥ येथा योगे जाळा

॥ तो की सर्व घटी तार्थ ॥ रत्न बोहली शोभती
 ॥ चौरंग जडीत ॥ ६७ ॥ जेन क तो जेन क बंधु
 ॥ कण्या सहीत ॥ नेहा वो पुन्य म्हणती ब्राम्ह
 ॥ ण समस्त ॥ मंगळ वषट्काचा घोश तो की
 ॥ बहूत ॥ वीमानी यानी पुश्य वृषी करती हात ॥
 ॥ ७० ॥ लाजा हो मादी ते सर्व कर्म संपादोनी ॥
 ॥ ब्राम्हण मंत्र ज्ञान ॥ नीव दधनी ॥ सम
 ॥ स्नासी गौरवी ॥ दक्षणी ॥ जेन क
 ॥ म्हणे सत्वर या ॥ तो नी ॥ ७१ ॥ सुमु
 ॥ स्वर्ण क या नी ॥ तो व र्ण भार्या ॥ कौश
 ॥ त्या सुमी आती सरीत काळो क या ॥ ने धवावा
 ॥ द्ये वाजती मंडु कसन या ॥ मंदीरी ने नसे सु
 ॥ मेधा जेन क उपाया ॥ ७२ ॥ चव धी स्नुशा सी
 ॥ वस्त्रे ते की व्यंकंकार ॥ कौशल्या घाली तसे
 ॥ अपुल्या नी जकर ॥ चीतान रुप घडीला ॥

॥ तो सर्व प्रकार ॥ अल्हा दुल्या सरव्या ज्ञान
 ॥ कीचे भाग्य थोर ॥ ७३ ॥ रुषी ब्राह्मण पात
 ॥ लेने स्थान करोन ॥ अयोध्या पुरीचे सर्व अ
 ॥ णीले पाचारुन ॥ वास्ये वाजवीत सब जे
 ॥ नक प्रधान ॥ मग कनक पात्रे घातलीने
 ॥ की स्तीर्ण ॥ ७४ ॥ सा सात वण शाखा मेघ कु
 ॥ ट सा बारी ॥ वडे पाप ॥ गेवह को सी बीरी ॥
 ॥ बुंधे लाडु केणी ॥ गडे पुरी ॥ पोव्या
 ॥ भात पायस शोध ॥ पुरी ॥ ७५ ॥ दधीष्ट
 ॥ त नाना परीच्या त्या ॥ णी ॥ रूपे ते सह श्री
 ॥ राम बैसले भांडे ॥ ये राण घातली ते का
 ॥ जे नक नंदनी ॥ वीदे ही संकल्प सोडी श्री रा
 ॥ मचेरणी ॥ ७६ ॥ सुमीत्रा कौशल्या कैकया
 ॥ ह्या वर माता ॥ अणस्वीस मस्त राखीयाच्या
 ॥ सावनीता ॥ सुमेधा भस्मोडे वाडी अपुले
 ॥ होता ॥ सकळी स्वस्त सोडे न करावे की अता ॥

॥ पुंसा सोह का जाला तो की दीव सचार ॥ सहर सा
 ॥ डे के ले ते की मोह ती वर ॥ बरास हव स्या भरणे
 ॥ दी ली अ पार ॥ सम ग ब्राह्मणा लागी वो पीला दे
 ॥ कार ॥ ७८ ॥ मग सहर के ल देव क उ थापन ॥
 ॥ रु स ग फु गण मा गु ती मंड पायेण ॥ मा ग ते क
 ॥ सी या सी दी ली क न क भन ॥ ये था वी धी क स
 ॥ जाले ते सर्व स प म ॥ स क क व रा डी अणी
 ॥ सर्व रु वी व र ॥ व स क भरणे ते अ कं
 ॥ कार ॥ व स ला ॥ म श्य र से कुं जेर ॥
 ॥ दा स दा सी म जेर ॥ ची र की लार ॥ ८० ॥
 ॥ म ग द श र थ स यो न न या ग ॥ सर्व स मु दा वे
 ॥ सु शा स ह व र्त मा न ॥ ते को र थ रु ड जाले रा म
 ॥ ल सु म ग ॥ म तो ग पृ षी वे घ ले भ र्त श नु घ न ॥
 ॥ ८१ ॥ वी दे ही घाल वी त नी घाला तो अ दर ॥ सु
 ॥ मे धा स र व्वा वी लो की ती उ प सी व र ॥ द श र थ
 ॥ जे न का सी की र वी मा धार ॥ ते का वा द्य का रा



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com